

शेखावाटी अंचल के निर्भीक पत्रकार, इतिहास-साधक एवं सांस्कृतिक चेतना के संवाहक : श्री गोविंद राम हरितवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विरेंद्र कुमार चान्देला, सहायक आचार्य (इतिहास), राजकीय कन्या महाविद्यालय, प्रतापगढ़

Email - virendra1982ij@gmail.com

सारांश

राजस्थान का शेखावाटी अंचल अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, ऐतिहासिक धरोहरों एवं जन-जागरण की चेतना के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इस क्षेत्र की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं प्रचारित करने में अनेक साहित्यकारों, पत्रकारों एवं इतिहासकारों का योगदान रहा है। उन्हीं में एक महत्वपूर्ण नाम वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं इतिहास-चिंतक श्री गोविंद राम हरितवाल का है। इन्होंने पत्रकारिता को केवल समाचारों तक सीमित न रखकर उसे जन-जागरण, सांस्कृतिक संरक्षण एवं क्षेत्रीय इतिहास लेखन का सशक्त माध्यम बनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में श्री हरितवाल के जीवन, पत्रकारिता, साहित्य-सृजन, इतिहास लेखन एवं सामाजिक योगदान का सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : शेखावाटी, पत्रकारिता, क्षेत्रीय इतिहास, सांस्कृतिक चेतना, गोविंद राम हरितवाल, लोक-संस्कृति, जन-जागरण।

प्रस्तावना:-

इतिहास केवल राजाओं, युद्धों और राजनीतिक घटनाओं का विवरण नहीं है। इतिहास का वास्तविक स्वरूप तब पूर्ण होता है जब उसमें सामान्य जनजीवन, गांव, लोक-स्मृतियां, सामाजिक परंपराएं, धार्मिक स्थल, स्थापत्य अवशेष, जल-संरचनाएं, लोक-कथाएं तथा स्थानीय व्यक्तित्व भी सम्मिलित किए जाएं। आधुनिक इतिहास लेखन में इसी कारण 'क्षेत्रीय इतिहास' का महत्व निरंतर बढ़ा है।

क्षेत्रीय इतिहास किसी छोटे भू-भाग की ऐतिहासिक यात्रा को समझने का माध्यम है। किसी गांव की बावड़ी, किसी वीर पुरुष की छतरी, किसी प्राचीन टीले, किसी मंदिर, किसी युद्ध से जुड़ी स्थानीय स्मृति अथवा किसी लोक-परंपरा में उस क्षेत्र के अतीत के अनेक सूत्र छिपे हो सकते हैं।

शेखावाटी अंचल में क्षेत्रीय इतिहास की इस परंपरा को पत्रकारिता के माध्यम से जनसामान्य तक पहुंचाने वाले व्यक्तित्वों में श्री गोविंद राम हरितवाल का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने समाचार-पत्र 'शेखावाटी उद्धार' को स्थानीय इतिहास और संस्कृति के विमर्श का मंच बनाया।

उनके लेखन में क्षेत्रीय समस्याओं के साथ-साथ उन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को भी स्थान मिला, जिन्हें सामान्यतः मुख्यधारा के इतिहास लेखन में अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाता। इस दृष्टि से उनकी पत्रकारिता को 'स्थानीय इतिहास के जन-प्रसार' की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

श्री गोविंद राम हरितवाल : जीवन एवं शिक्षा:-

श्री गोविंद राम हरितवाल का जन्म 27 मई 1955 को राजस्थान के झुंझुनूं जिले के ग्राम बबाई में हुआ। आपके पिता श्री मालीराम जी हरितवाल एवं माता श्रीमती श्रवणी देवी संस्कारवान एवं सामाजिक चेतना से युक्त व्यक्तित्व थे। प्रारम्भिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा आपने अपने जन्मस्थान बबाई में ही प्राप्त की। तत्पश्चात आपने 1975 में एस.एस. जैन सुबोध कॉलेज, जयपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा 1977 में राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से इतिहास विषय में एम.ए. किया। इतिहास विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारण आपके भीतर क्षेत्रीय इतिहास एवं सांस्कृतिक धरोहरों के अध्ययन की विशेष रुचि विकसित हुई।



श्री गोविन्द राम हरितवाल



कुंडा धाम में वृक्षारोपण करवाते हुए

इतिहास विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करना उनके आगामी जीवन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। पत्रकारिता के क्षेत्र में आने के बाद भी इतिहास उनके चिंतन का महत्वपूर्ण आधार बना रहा। उनके लेखन में स्थानीय घटनाओं, स्मारकों, व्यक्तित्वों और लोक-स्मृतियों के प्रति जो रुचि दिखाई देती है, उसके पीछे उनके इतिहास-बोध की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है।

पत्रकारिता में प्रवेश और 'शेखावाटी उद्धार':-

व्यावसायिक जीवन की शुरुआत आपने वर्ष 1980 में नगर परिषद जयपुर में तथा भारत सरकार के उपक्रम प्रसार भारती के आकाशवाणी केंद्र जयपुर में सेवाएं देकर किया किंतु आपकी मूल रुचि पत्रकारिता एवं साहित्य-साधना में थी। इसी कारण आपने 1981 में 'पिलानी की जनता' समाचार-पत्र के प्रबंध संपादक के रूप में कार्य करना आरम्भ किया।

इसके पश्चात नवंबर 1982 से वर्ष 2021 तक उन्होंने 'शेखावाटी उद्धार' के संपादक के रूप में कार्य किया। लगभग चार दशकों की यह दीर्घ पत्रकारिता यात्रा अपने आप में महत्वपूर्ण है। 'शेखावाटी उद्धार' उनके लिए केवल समाचार प्रकाशित करने का माध्यम नहीं था। यह क्षेत्र की समस्याओं, सांस्कृतिक परंपराओं, ऐतिहासिक विरासतों और सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्ति देने वाला मंच बन गया। उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न मंदिरों, धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक स्थलों, छतरियों, गढ़ों, बावड़ियों तथा भूली-बिसरी सामाजिक परंपराओं के बारे में लेख प्रकाशित किए। इसके साथ ही क्षेत्र के प्रसिद्ध संतों, विद्वानों, इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं सामाजिक व्यक्तित्वों का परिचय जनता तक पहुंचाया।

इस प्रकार 'शेखावाटी उद्धार' को क्षेत्रीय स्मृति के दस्तावेजीकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जा सकता है।

क्षेत्र का इतिहास केवल पत्थरों और स्मारकों में नहीं मिलता। लोकगीत, लोककथाएं, विवाह परंपराएं, धार्मिक उत्सव, सामाजिक रीति-रिवाज, लोकदेवताओं की मान्यताएं, पारंपरिक व्यवसाय और स्थानीय बोलियां भी इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। श्री हरितवाल ने 'शेखावाटी उद्धार' के माध्यम से क्षेत्र की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं को सामने लाने का प्रयास किया। उन्होंने उन परंपराओं पर लेख प्रकाशित किए जो आधुनिकता के प्रभाव के कारण धीरे-धीरे विस्मृति की ओर बढ़ रही थीं। इस प्रकार उनका पत्रकारिता कार्य सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण के रूप में भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

श्री हरितवाल की पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण पक्ष क्षेत्र के विद्वानों और विशिष्ट व्यक्तित्वों का परिचय जनता तक पहुंचाना रहा। उन्होंने क्षेत्र के प्रसिद्ध संतों, विद्वानों, इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं सामाजिक व्यक्तित्वों के जीवन एवं योगदान पर लेख प्रकाशित किए। इस प्रकार उन्होंने स्थानीय प्रतिभाओं एवं व्यक्तित्वों को व्यापक सामाजिक पहचान प्रदान करने का कार्य किया। यह कार्य इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी क्षेत्र की बौद्धिक परंपरा को समझने के लिए वहां के स्थानीय विद्वानों और रचनाकारों के योगदान का अध्ययन आवश्यक है।

क्षेत्रीय इतिहास लेखन की अवधारणा और हरितवाल का योगदान:-

श्री हरितवाल का व्यक्तित्व केवल पत्रकार तक सीमित नहीं है। उनके साहित्यिक कार्यों और इतिहास लेखन को देखने पर स्पष्ट होता है कि उन्होंने साहित्य, पत्रकारिता और इतिहास के बीच एक सेतु निर्मित किया। उन्होंने पत्रकारिता के साथ-साथ साहित्य एवं इतिहास लेखन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी प्रथम पुस्तक 'आठ कहानियाँ' वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई। इस कृति में सामाजिक यथार्थ एवं मानवीय संवेदनाओं का प्रभावी चित्रण देखने को मिलता है।

वर्ष 2015 में उन्होंने 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' नामक कृति का संपादन एवं प्रकाशन किया, जिसमें 'शेखावाटी उद्धार' से जुड़े दिवंगत कवियों की कविताओं का संकलन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। यह कृति शेखावाटी क्षेत्र की साहित्यिक परंपरा को संरक्षित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हुई।

वर्ष 2021 में उन्होंने अपने परम मित्र सोहनलाल वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित 'रेत का नाविक' पुस्तक का संपादन एवं प्रकाशन किया।

क्षेत्रीय इतिहास किसी क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक पहचान को समझने का महत्वपूर्ण साधन है। बड़े राजनीतिक इतिहास के भीतर गांव और स्थानीय समुदाय अक्सर गौण दिखाई देते हैं, जबकि वास्तविक सामाजिक इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं इन्हीं स्थानीय इकाइयों में सुरक्षित रहती हैं। श्री हरितवाल के लेखन की विशेषता यह रही कि उन्होंने गांव और स्थानीय भूगोल को इतिहास के अध्ययन का विषय माना। उन्होंने बबाई, पपुरना, खेतड़ी और शेखावाटी के अन्य क्षेत्रों की ऐतिहासिक पहचान को सामने लाने का प्रयास किया।

वर्ष 2022 में प्रकाशित 'बबाई का इतिहास' को क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। किसी गांव पर केंद्रित इतिहास लिखना सामान्यतः कठिन कार्य होता है, क्योंकि उसके लिए अभिलेखीय सामग्री के साथ-साथ मौखिक इतिहास, स्थानीय परंपराओं, पारिवारिक दस्तावेजों, स्मारकों और भौगोलिक साक्ष्यों का संकलन आवश्यक होता है।

बबाई के इतिहास को पुस्तकाकार रूप देना इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि स्थानीय स्तर पर बिखरी ऐतिहासिक सामग्री एक स्थान पर संकलित होती है। भविष्य के शोधकर्ता इस प्रकार के ग्रंथों को आधार बनाकर बबाई तथा आसपास के क्षेत्र पर अधिक विस्तृत पुरातात्विक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक शोध कर सकते हैं।

वर्तमान में उनकी महत्वपूर्ण कृति 'पूरा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का गांव: डाडा फतेहपुरा' प्रकाशनाधीन हैं। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परंपरा को अपनी लेखनी के माध्यम से जीवंत बनाने वाले वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं इतिहास-चिंतक श्री गोविंद राम हरितवाल की यह कृति क्षेत्रीय इतिहास लेखन की दृष्टि से एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय ग्रंथ होगी। यह पुस्तक केवल किसी गाँव के इतिहास का संकलन मात्र नहीं बल्कि शेखावाटी अंचल की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना का सजीव दस्तावेज है। विशेष रूप से लोक-स्मृतियों, जनश्रुतियों और उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों का समन्वय इस कृति को विशिष्ट बनाता है। इन कृतियों के माध्यम से वे क्षेत्रीय इतिहास को व्यापक रूप में प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

धूम्रपान निषेध एवं सामाजिक जागरूकता:-

श्री हरितवाल की गतिविधियों में सामाजिक जागरूकता का पक्ष भी महत्वपूर्ण रहा। धूम्रपान निषेध के प्रयासों के लिए उन्हें जिला कलेक्टर द्वारा सम्मानित किया गया। यह पहल बताती है कि उनकी पत्रकारिता केवल राजनीतिक अथवा ऐतिहासिक विषयों तक सीमित नहीं थी। वे सामाजिक जीवन से जुड़े प्रश्नों को भी सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाते थे।

पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनमत निर्माण लोकतांत्रिक समाज में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस संदर्भ में उनका कार्य जन-जागरूकता की पत्रकारिता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के प्रति दृष्टिकोण:-

श्री हरितवाल के पत्रकारिता कार्य का एक प्रमुख पक्ष ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण की चेतना है। उन्होंने बार-बार इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि यदि ऐतिहासिक स्मारकों, बावड़ियों, छतरियों, मंदिरों एवं अन्य धरोहरों का समय रहते संरक्षण नहीं किया गया तो वे नष्ट हो सकती हैं।

उनकी पत्रकारिता ने इस प्रश्न को जनता के साथ-साथ प्रशासन के सामने भी रखने का कार्य किया।

क्षेत्रीय इतिहास के संरक्षण में स्थानीय समुदाय की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। किसी स्मारक की रक्षा केवल सरकारी विभागों की जिम्मेदारी नहीं होती; स्थानीय समाज में उसके प्रति ऐतिहासिक चेतना विकसित करना भी आवश्यक है। श्री हरितवाल के लेखन में यह दृष्टिकोण दिखाई देता है।

श्री गोविंद राम हरितवाल ने शेखावाटी क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु उल्लेखनीय प्रयास किए। उन्होंने बबाई एरोड्रम के विकास के लिए निरंतर प्रयास किए तथा क्षेत्र की ऐतिहासिक बावड़ियों एवं स्मारकों के संरक्षण हेतु राज्य एवं केंद्र सरकार को पत्र लिखे।

राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में बावड़ियां केवल जल-स्रोत नहीं रही हैं। वे सामाजिक जीवन, स्थापत्य कला, जल प्रबंधन तथा स्थानीय सामुदायिक संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। बबाई की प्राचीन बावड़ी के संरक्षण के लिए उठाई गई आवाज को स्थानीय पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है।

राजस्थान की छतरियां स्मृति स्थापत्य की विशिष्ट परंपरा का प्रतिनिधित्व करती हैं। किसी वीर पुरुष, शासक अथवा महत्वपूर्ण व्यक्ति की स्मृति में निर्मित छतरी उस व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा स्थानीय स्मृति का प्रतीक होती है। मंडोली के पास में स्थित राव दलेलसिंह धूला एवं कुँवर लक्ष्मणसिंह की छतरियों को इसी दृष्टि से देखा जा सकता है। जो मावण्डा-मंडोली युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गये थे। ऐसे स्मारकों का संरक्षण आवश्यक है क्योंकि इनके माध्यम से इतिहास के लिखित स्रोतों के साथ-साथ स्थानीय स्थापत्य, कला, लोक-स्मृति एवं मौखिक इतिहास के स्रोत भी उपलब्ध होते हैं।

श्री हरितवाल द्वारा इन छतरियों को सुरक्षित किए जाने के लिए सरकारी स्तर पर प्रयास किया। उनकी पत्रकारिता केवल वर्तमान समस्याओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह अतीत की विरासत को भविष्य तक पहुंचाने के प्रश्न से भी जुड़ी थी। श्री हरितवाल ने क्षेत्र में विद्यमान प्राचीन सभ्यताओं एवं पुरास्थलों की ओर ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया। त्योंदा में रीड का टीला, बबाई, गुरारा आदि स्थलों को उन्होंने अपने लेखन में स्थान दिया। इन स्थलों का अध्ययन क्षेत्रीय इतिहास को व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने में सहायक हो सकता है। स्थानीय टीले, पुरास्थल और प्राचीन अवशेष किसी क्षेत्र की मानवीय बसावट, आर्थिक गतिविधियों, संस्कृति एवं सामाजिक विकास के अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं।

इस संदर्भ में पत्रकारिता के माध्यम से ऐसे स्थलों को सार्वजनिक विमर्श में लाना शोध की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। इसके बाद पुरातात्विक सर्वेक्षण, अभिलेखीय अध्ययन, पुरावशेषों का वैज्ञानिक परीक्षण और विश्वविद्यालयीय शोध जैसे कार्य क्षेत्रीय इतिहास को और अधिक प्रमाणिकता प्रदान कर सकते हैं।

श्री हरितवाल ने बबाई के पास मण्डाना ग्राम में कुण्डा धाम को विकसित करने के लिए पिछले कुछ वर्षों से प्रयास किए। उनके प्रयासों का उद्देश्य धार्मिक स्थल को विकसित करने के साथ-साथ क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं पर्यटन संभावनाओं को सामने लाना भी रहा। वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा 'नमो वन योजना' के अंतर्गत इस क्षेत्र के विकास के लिए विशेष कार्य योजना स्वीकृत की गई है और इस पर कार्य चल रहा है। इस प्रकार कुण्डा धाम के विकास का विषय धार्मिक आस्था के साथ-साथ स्थानीय पर्यटन, पर्यावरण एवं क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था से भी जुड़ता है।

क्षेत्रीय विकास के प्रश्नों को लेकर भी श्री हरितवाल सक्रिय रहे। उन्होंने बबाई को तहसील, पंचायत समिति एवं विधानसभा चुनाव क्षेत्र एवं खेतड़ी को जिला बनाने की मांग को अपने समाचार-पत्र के माध्यम से उठाया तथा सरकार को पत्र लिखकर इस दिशा में प्रयास किए। यह पहल बताती है कि उनके लिए पत्रकारिता का अर्थ केवल घटनाओं का विवरण देना नहीं था, बल्कि क्षेत्र की प्रशासनिक एवं विकास

संबंधी आवश्यकताओं को सरकार और जनता के सामने रखना भी था। क्षेत्रीय पत्रकारिता का यह स्वरूप स्थानीय लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन प्रयासों को क्षेत्रीय प्रशासनिक आवश्यकताओं को राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। यह उनकी जनपक्षधर पत्रकारिता के एक अन्य आयाम को सामने लाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि किसी प्रशासनिक मांग का समर्थन करना और उसके परिणामस्वरूप सरकारी निर्णय होना दो अलग-अलग बातें हैं।

शेखावाटी की ऐतिहासिक हवेलियां, मंदिर, छतरियां, बावड़ियां, गढ़, प्राकृतिक स्थल और लोक-संस्कृति पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण संसाधन हैं। श्री हरितवाल ने अपने समाचार-पत्र में क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थलों तथा प्राकृतिक एवं धार्मिक धरोहरों पर निरंतर लेख प्रकाशित किए और क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किए जाने की आवश्यकता को सामने रखा। उनकी दृष्टि में ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण केवल अतीत की रक्षा नहीं है, बल्कि उससे स्थानीय रोजगार, पर्यटन और आर्थिक विकास की संभावनाएं भी जुड़ी हैं।

क्षेत्रीय इतिहास में मौखिक परंपराओं एवं लोक-स्मृतियों का विशेष महत्व है। गांवों में प्रचलित कथाएं, युद्धों की स्मृतियां, वीरों की गाथाएं, मंदिरों से संबंधित परंपराएं तथा परिवारों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही स्मृतियां इतिहास के महत्वपूर्ण सहायक स्रोत बन सकती हैं। श्री हरितवाल ने ऐसी स्थानीय स्मृतियों को अपने लेखन के माध्यम से सुरक्षित रखने का प्रयास किया। बंबई के वीर इतिहास से संबंधित राव दलेलसिंह धूला, कुँवर लक्ष्मणसिंह एवं राजसिंह की स्मृति इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है। हालांकि शोधपरक इतिहास लेखन में मौखिक परंपराओं को अभिलेखीय एवं पुरातात्विक स्रोतों के साथ मिलाकर जांचना आवश्यक होता है। इस दृष्टि से श्री हरितवाल द्वारा संकलित सामग्री भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए प्राथमिक स्रोत-सामग्री का आधार बन सकती है।

श्री हरितवाल के व्यक्तित्व की एक विशिष्ट विशेषता पत्रकारिता और इतिहास-बोध का समन्वय है। पत्रकार वर्तमान घटनाओं को दर्ज करता है, जबकि इतिहासकार अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करता है। किंतु क्षेत्रीय स्तर पर दोनों भूमिकाएं कई बार एक-दूसरे से जुड़ जाती हैं। किसी पत्रकार द्वारा आज दर्ज की गई स्थानीय घटना भविष्य में इतिहास का स्रोत बन सकती है।

‘शेखावाटी उद्धार’ के माध्यम से श्री हरितवाल ने लंबे समय तक क्षेत्र की घटनाओं, सामाजिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, स्थानीय समस्याओं और ऐतिहासिक स्थलों को दर्ज किया। इस दृष्टि से उनके समाचार-पत्र के पुराने अंक भविष्य में शेखावाटी के सामाजिक इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं।

लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तंभ माना जाता है। मीडिया की भूमिका केवल सूचना देना नहीं, बल्कि सत्ता एवं प्रशासन से प्रश्न करना, जनसमस्याओं को सामने लाना, जनमत को अभिव्यक्ति देना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करना भी है। श्री हरितवाल ने अपने समाचार-पत्र ‘शेखावाटी उद्धार’ के माध्यम से क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को मुखरता से उठाया। उन्होंने स्थानीय जनता की समस्याओं को प्रशासन एवं सरकार तक पहुंचाने का प्रयास किया। उनकी पत्रकारिता में निर्भीकता, क्षेत्रीय सरोकार और जनहित प्रमुख दिखाई देते हैं। यही कारण है कि उनकी पत्रकारिता को स्थानीय लोकतांत्रिक विमर्श के अध्ययन के संदर्भ में भी देखा जा सकता है।

श्री गोविंद राम हरितवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने पर निम्न प्रमुख विशेषताएं सामने आती हैं-

1. दीर्घकालीन पत्रकारिता- लगभग चार दशकों तक क्षेत्रीय पत्रकारिता से जुड़े रहना।
2. इतिहास-बोध इतिहास विषय में उच्च शिक्षा तथा उसके आधार पर क्षेत्रीय इतिहास में रुचि।
3. स्थानीय इतिहास का दस्तावेजीकरण- बंबई एवं आसपास के क्षेत्र के इतिहास को पुस्तक एवं पत्रकारिता के माध्यम से दर्ज करना।
4. सांस्कृतिक संरक्षण- लोक-परंपराओं, धार्मिक स्थलों एवं सामाजिक रीति-रिवाजों को सामने लाना।
5. स्मारक संरक्षण- बावड़ियों, छतरियों और ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण की आवश्यकता उठाना।

6. जन-जागरण- सामाजिक एवं जनहित के विषयों को पत्रकारिता के माध्यम से उठाना।
7. क्षेत्रीय विकास- प्रशासनिक एवं विकास संबंधी मांगों को सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना।
8. पर्यटन चेतना- ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थलों को पर्यटन से जोड़ने की संभावना पर लेखन।
9. स्थानीय व्यक्तित्वों का परिचय- संतों, विद्वानों, साहित्यकारों और इतिहासकारों को जनसामान्य तक पहुंचाना।
10. लोकतांत्रिक पत्रकारिता- स्थानीय समस्याओं को निर्भीकता से उठाना।

आलोचनात्मक मूल्यांकन एवं शोध की संभावनाएं

श्री हरितवाल के कार्य का अध्ययन केवल प्रशंसात्मक दृष्टि से करना पर्याप्त नहीं होगा। अकादमिक शोध की दृष्टि से उनके पत्रकारिता-साहित्य को प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के संदर्भ में आलोचनात्मक रूप से देखना आवश्यक है।

निष्कर्ष:-

श्री गोविंद राम हरितवाल का व्यक्तित्व पत्रकारिता, साहित्य, इतिहास-बोध और सामाजिक चेतना के समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने अपने जीवन के लंबे कालखंड को शेखावाटी क्षेत्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना के लिए समर्पित किया। और आगे भी निरंतर जारी है। उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि उन्होंने स्थानीय इतिहास को केवल अतीत की घटनाओं के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे वर्तमान समाज की पहचान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए विरासत के रूप में समझा। बबाई की प्राचीन बावड़ी के संरक्षण का प्रयास, मावण्डा-मंडोली युद्ध से जुड़ी वीर स्मृतियों एवं छतरियों को संरक्षित कराने की पहल, क्षेत्र के प्राचीन स्थलों को प्रकाश में लाने का प्रयास, कुण्डा धाम के विकास की दिशा में सक्रियता, बबाई को पंचायत समिति बनाने तथा क्षेत्रीय विकास की मांगों को उठाना, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों को पर्यटन से जोड़ने की वकालत और 'शेखावाटी उद्धार' के माध्यम से स्थानीय समस्याओं को मुखरता से सामने रखना उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है। उनकी पत्रकारिता ने इतिहास को पुस्तकालयों और अभिलेखागारों से निकालकर गांवों और जनसामान्य तक पहुंचाने का कार्य किया। उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि किसी क्षेत्र का इतिहास केवल बड़े राजवंशों या राजनीतिक घटनाओं में नहीं, बल्कि गांव की बावड़ी, छतरी, मंदिर, टीले, लोकगीत, परंपराओं और स्थानीय स्मृतियों में भी जीवित रहता है।

इस दृष्टि से श्री गोविंद राम हरितवाल का योगदान केवल एक पत्रकार या लेखक के रूप में ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय इतिहास के संकलनकर्ता, सांस्कृतिक विरासत के जागरूक प्रहरी और जन-सरोकारों को स्वर देने वाले पत्रकार के रूप में अध्ययन योग्य है। उनकी कृतियां और पत्रकारिता सामग्री भविष्य में शेखावाटी के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास के शोधार्थियों के लिए उपयोगी स्रोत बन सकती हैं। विशेष रूप से 'शेखावाटी उद्धार' के दशकों पुराने अंकों का व्यवस्थित संकलन एवं विश्लेषण किया जाए तो क्षेत्रीय इतिहास, समाज और संस्कृति में आए परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किया जा सकता है।

संदर्भ-सामग्री -

1. हरितवाल, गोविंद राम — बबाई का इतिहास, 2022
2. हरितवाल, गोविंद राम — क्या भूलूँ क्या याद करूँ, 2015
3. हरितवाल, गोविंद राम — रेत का नाविक, 2021
4. 'शेखावाटी उद्धार' — विभिन्न प्रकाशित अंक।
5. बबाई एवं आसपास के क्षेत्र की स्थानीय मौखिक परंपराएं एवं जन-स्मृतियां।
6. बबाई की प्राचीन बावड़ी एवं छतरियों से संबंधित स्थानीय सामग्री।
7. मावण्डा-मंडोली युद्ध से संबंधित उपलब्ध ऐतिहासिक एवं अभिलेखीय सामग्री।
8. स्थानीय प्रशासन एवं राज्य सरकार से संबंधित उपलब्ध पत्राचार एवं अभिलेख।
9. क्षेत्र के मंदिरों, धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक स्थलों एवं ऐतिहासिक स्मारकों से संबंधित स्थानीय अभिलेख।
10. मीणा, मदनलाल. Oriental Journal of Descent Studies. 2025
11. क्षेत्रीय इतिहास एवं शेखावाटी की सांस्कृतिक परंपराओं से संबंधित प्रकाशित शोध एवं ग्रंथ।